७०००० पानाप्ट्वी प्रकाशक

जिन वाणी सेवक उम्मेदसिंह
मुमदीलाल सिंधल जैन
ठि० कट हा जल्लावालिया
मु• पत्तत्तर वंजाव
मु• पत्तप्रयोग
भीवीर निर्वाणसंस्वत २४४८वि॰ वं•१८७८

00000000000

भादयमास चगस्त१८२२(प्रति१००००कपी)

पञ्जाब एकोनामोकल प्रेस, लाहौर।

वीर सेवा मन्दिर दिल्ली

*

ल्हम सर स

काल न.

म्बरम्

MARKARIO ON DURO ON DOS.

मर्व माई वा बहनासे सविनयपर्वकायर्ज है कि इसकी दीवेश सामन या इसको निमित्त दीवा जलाकर नहीं पढें। खासकर होलासं लगकर कार्तिकको पणमासी तक प महीने दात्र पर बहुत जाव गिरने से त्रसनीवां को वड़ो भारो हिंसा होता है। अपगर राजाको भा पढनः चाइ तो चंद्रमा की रोयनामें पढ सत्ते ह । वः नाः प्रानापर्व्याक्षाजापदिनकेसमय और रात्रीक्षी, मःलासे जाय करनाही श्रष्ठहे। जिन भार्च या बहुनांका ये धानापव्वी निस्यप्रति नियम से जाय अहने का 'इच्छा हो। वेसाई म का मात्र को पोष्ट खर्च के टिकट भेज कर सगवा सुवे। प्रकाशक।

(२) याना एटवीं पढ़नेकीरीतियानी समभ योरशुद्ध स्पष्ट नवकारशंत्र जन्मं १काभंक हो वहां ग्रमी-परिहन्तार्णपदना जहांपरश्काशंकहो, बहाणमी-सिद्धाणं पढना। जन्नांश्का अंकरोबहां ग्रमोधायरि याणं पट्ना उदां ध्वा अंव होवहां ग्रमो छवः सा याणं पढ ना ज हां भूका अक हो वहां ण मी लोप सटक-साहणं पढना इसका पिक जो । से प्रतक्रकांक चार्ग पीक कपर नीचे आदे छनको ऊपर सिखे अनुसार पर्ना। आनाप्टवी पदने का फल:--मानापरवीं जपे जोकाय, छ:मासीतपकाफ बहोय संदे ६ सम्याणो न सगार, निर्मस्मने जपोनवकार श्रुद्धवस्वेधरविवेक। दिनदिनप्रतिलपै ली एक। इसबानायकी जोमणे। पांचसी सागरने पापकी इणे । स्थिर सनसेध्यान जोधरे । तेसंसार सोइलो

तिरे । प्राभकर्मको हरणको, मन्य वद्योनवकार ।

a बारोहादश् अंगमेंदेखिखें तत्वभाराएकश्रक्ष नवकारका शृद्ध जपे जोसार। ते संघे शभदेवका अपरमणार । सह।संच नवकार का पड़ी श्रव यह वीर्। शाद्धपाठ जिसने जण, मनसे धर कर धर । बीधन हिटे मंकटक्टे, वसेस्वर्ग (वस ण कोड़ा कोड़ी तिरमये, गणधर किथोवकाण । स्ख कारण भवियण स्मरी जित नवकारी, जिनशासन आ गमचौदाप्रबस्तारीश्णसंत्रम हिमाकहर नसामें षारी, सरतत्वसन निःततः हितर्र फलदातारी। इस में २०यं बहाँ निरयप्रति-जपैती ट:ख दि दनहीं होय नवकारमं व शाजापमाला में करनें में यानापट्वी से जापका फल बहुतही च्याटेडे इश्फ दारे पीछे होनेसेद्समंमनस्थिरर हताई और १६८में५बाटा-पर्वीकाजापहोसका हैलेकिरशास्त्रीम पादे पढने वंगर नवकार मंत्रादिहम कोगकोईसापाठमी इद

8 स्टब्ट नहीं पढ़ सक्त हैं भीर सम्यक्त की पारित भी अवनी आसी से खी जैन घस है दा स्बी हो जब ध्याय-अने प्रति कर विकास हो हो सक्ती सहाय सद अपहों हो ने बच्च किस्मी हमारे साई वहन दिल्दी आहा की की नहीं पढ़ाते हैं। (विद्यास लानी)

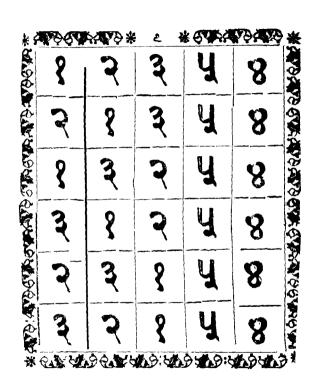
दिया एवं उत्त । इस यमते हुनी एवस सन्यन प्यारं । यज्यमा फिरनाथ न बावेस्टरे होल्टनहारं । टेश । भन्यनहीं नोषं करस्ता है विद्यापनका जगताहीं। वहींकोईचोरीकरसका है भएतिसेस्का, नाहीं । विद्यापन ने की बाहेसीकर देखेत् राज्यसारीपनम्बद्धस्थित के प्रेयस्थनीं शिवस्कृत्य है ऐसाउत्तम्बन बर्जमां थीर योगं नहींसिलतायासम्बद्धाती है एक्ष्योसकी सांस्थित्न से सब विद्या बाजाती है जीबासक की मातपिता







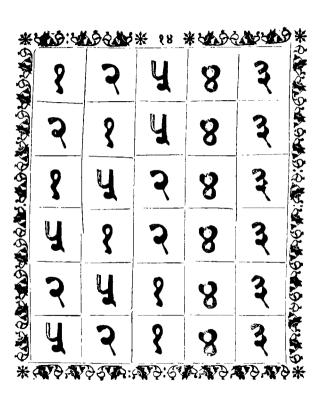
3	3	8	8	4
3	3	8	8	y
3	8	3	8	Ч
8	3	3	8	y
3	8	3	8	ч
8	3	3	?	y





€**₩**€**₩**:€**₩***

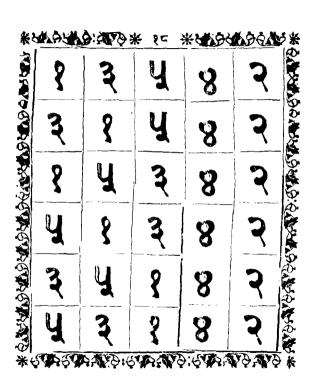
₩9:**₩9**₩9*





3	8	y	\$	3
8	3	y	8	3
3	ч	8	8	3
y	3	8	8	3
8	ч	3	8	3
ų	8	3	8	3

8	3	8	ч	3
3	8	8	4	3
8	8	3	y	3
8	8	3	y	3
3	8	\$	y	2
g	3	8	y	







3	3	ч	8	\$
3	3	y	8	\$
3	ų	3	8	\$
y	3	3	8	?
3	ų	3	8	\$
y	3	3	8	. 8

漢葉法法 ※液状を液体を放射を成

ながるがあるがある

२५वरलीक्षे नहीं ३डाते हैं। ने उत्तव, जनकेंदरमन हैं कार्तास्तः राजहाते हं ताते स्वजन पदी पदावी विद्यादानकरोमाहे लक्त्यये॰विद्याः ॥ विद्यादानं परमदार्गनेव बहान साधन है। दो होन्य तिपद और विद्या कब होत नएजसमानसूपति पृज्यनिजदेश ने नव ध्यक्षिय । एवं १ राजभागधनसंपदा विपत ममयत बजाहिस्द्विचिष्टा समयतजेनः नरकी अंहर वरनारी की सातसम **परधनध्**ल समान। सर जीयन के प्रायतन निनंता पंडित जान श्टारास तथीर बच्म के अपी पेत्राही अस्परदर्शन अमे चित्र जगमें दस्तेभदोयअ परव अर्वलोलक्तो उदयबस्तली राज बिन प्राप्त्य प्रस्वाण क्ष त्रभी नरक का साजपूर्ध में णहत्य तेष्य परवर्षणहत्वतेत्रहाधर्मग स्यतेशस्यतोधः स्तता अधीद्शमें करतचंत्रार स् अवमे करतनिर्वाण घ⊇पंथ साधिब सान्यतिर्धेव समान ॥ ७ ॥ अहिंसाव सोधर्मः यतोधर्मेश्वतो जवः ।

नवकारमंत्र (महिमा ढाछ)। श्रीगरु धिचा दत ह (सून प्रागीरे) स्मर मंत्र नवकार(सोख सन्धाणीर) लोकोत्तम मंगल-भन्ना (सन प्राणीरे) प्रदारण जन बाधार (सीख (सन प्राणीरे)प्राकृत कप अनादि है(सन्प्राणीरे) मित शक्तर पैतीस (सीख सन प्राणीरे) पाप जाहिं सब जापतें (सुन) भाषा गणधर ईग्र (सीख) सन पवित्र कर सन्त्र की (सन) मसरी शंका को ख (सीख) वांक्ति वर पावै सही (मन) शीलवात नर नारि (मीख) विषधर बाधन भय करें (रून) बिनदाय दिच्न श्रनेक(सीख)व्याधि विषम व्यंत-र भजें(सन) विषति न व्यापे एक (सीख) कपि की शिखर समेदपै (सन) मंत्र दियो म्निराय (सीख) होय त्रमर नर शिववसी (सन) धर चौथी पयाय (सीक्स) व ह्यो ५ झरुचि सेटने

(२०) (र न)र मो देसके कीव(कीख)न्यसम्बंध मंज वे (स्न) भयो राव स्त्रीव (सी क)दीनी मंच सलोचना (सन) विद्यंत्री को जीव(शेख) गंगारे वी अवतरी (सन) सर्प डसी थी सीय (भीख) चारुटल पेविषक ने (सन) पायी व्य क्रभार (सीख) वर्षत ऊपर हागने (सन) भगे यगम सरमार (सीख) नामनामनी कलतही । सन) रेके ए। प्रदेशिक नव्द (शीख) अंच रेत तदही भये (सन) दबावात धरकेंद्र (सीका) चहरं के इसनी पंसी(हन) खग कीनी उपकार (सीख) अब कांच्ये सीता भई (रून) परमस्ती सकार (कीक) कक्ष कांग सकी दही। सेन चोर कंठ गत प्राण(सीख) संच किसाधी सेठने [सुन) सही सुरग सुक्थान(सीख) चंपापुर में ग्वास्था (स्न) पोषे सत्र सहान् (सीख) सेट सुदर्शन बवतरो(सुन) पश्चिले भव निर्वाण(सीख (२८) मंच महातम की कथा(मृत) नाम स्चना यह (सीख) श्री पए याभव ग्रंथ में (सन) व्यारसें सन कियी (सोस्) सात व्यवन सेवत हठी (सन) षधम अंजना चोर (मोस) शासा जाते मंत्र को (सन) (सोझो विद्या जार (सोख) जोवक सेठ सम्बोधिया (स्त) पापाचारो स्तान (सास)मंत्र प्रतापै 'पाइयो(सुन) सुन्दर स्वर्ग विमान (सी ब) पागे चीहे सोम हैं (स्त) पद लाही निरवार (मीख) तिनके नाम बखानते (स्न) कोई न पावे पार [सीख) बैठन चलते सोवते (सन) षादि धन्त सो घोर (सोस) इत पपराजित संत्र को (सन) मत बिसरोप्ते चोर (सी ख) सकत सोबा सब काल में (सुन) सर्वागम में सार (सीख) भूधर कबहु न भूलये (सुन)मन्य राज मनधार (सीख सुन प्राणीरे)